विश्व सामाजिक मंच-2024 काठमांडू, नेपाल, 15-19 फरवरी 2024

लोकविद्या जन आन्दोलन की कार्यशाला

विषय

लोकविद्या: एक दूसरी, नई और बेहतर दुनिया का ज्ञान आधार

स्थान: दिन और समय :

लोकविद्या साहित्य का स्टाल :

दृष्टि

लोकविद्या जन आन्दोलन सामान्य जन का ज्ञान आन्दोलन है. पढ़े-लिखे लोगों, विश्वविद्यालय, साइंस और आधुनिक राजसत्ता ने जिन लोगों को अज्ञानी घोषित कर रखा है; उनके ज्ञान का आन्दोलन है.

अधिकांश लोग यह मानते हैं कि विश्वविद्यालय की दीवारों के बाहर समाज में ज्ञान का विशाल सागर है. ज्ञान का यह महासागर बहुत व्यापक और गहरा है. इस विचार को मानने वाले भी बहुत लोग हैं कि लोग जानते हैं कि वे ज्ञानी हैं. इसके बावजूद, उन्हें और उनके ज्ञान को समाज में सम्मान नहीं है. उनके ज्ञान को आर्थिक मूल्य नहीं है इसलिए वे गरीब हैं; सार्वजनिक क्षेत्र में उनके ज्ञान को सम्मान नहीं है इसलिए वे हाशिये पर हैं ; जन-संगठनों से उनके सीधे रिश्ते नहीं है इसलिए वे राजनीतिक दृष्टि में गैरमहत्त्व के हैं. ये कौन लोग हैं? ये सामान्य जन कहलाते हैं. पूरा किसान समाज, कारीगर और आदिवासी समाज, ठेला-पटरीवाले, छोटे-छोटे दुकानदार, सभी तरह की सेवा और मरम्मत का काम करने वाले, महिलायें, लोक-कलाकार आदि ये सब सामान्य जन हैं, जो मिलकर विश्वविद्यालय के बाहर ज्ञान के इस महासागर का निर्माण और पुर्निर्माण करते हैं.

आज की पूंजीवादी व्यवस्था का ज्ञान-आधार साइंस में है. इसी साइंस के बल पर बहुसंख्य लोगों को गरीबी में धकेलकर कुछ लोगों को समृद्धि की ओर ले जाने का रास्ता बनाया गया है और ऐसा करना सृष्टि के विध्वंस का कारण बना है.

दूसरी नई और बेहतर दुनिया बनाने के लिए एक ऐसे आन्दोलन की आवश्यकता है, जो ज्ञान के लोक निर्मित महासागर की लहरों पर उठे और फैले. इस ज्ञान-सागर को बनाने वाले लोगों की प्रतिष्ठा का आन्दोलन ही लोकविद्या जन आन्दोलन है, जो यह आवाहन करता है कि किसान आन्दोलन, कारीगर और आदिवासियों के आन्दोलन, स्त्रियों और छोटी पूंजी के दुकानदारों के आन्दोलन व संघर्ष के नेतृत्व आदि अपने ज्ञान के बल पर एकसाथ एक मंच पर आयें. यह एक ज्ञान मंच होगा तथा दूसरी नई और बेहतर दुनिया बनाने का ज्ञान-आधार लोकविद्या में ही है, इसका दावा इस ज्ञान मंच से पेश करना होगा. ऐसी दूसरी दुनिया बनाने का रास्ता युद्ध मुक्त है,यह लोकविद्या दृष्टिकोण में निहित है.

लोकविद्या जन आन्दोलन के बारे में

लोकविद्या जन आन्दोलन का पहला अधिवेशन विद्या आश्रम पर सारनाथ, वाराणसी (भारत) में नवम्बर 2011 में हुआ और फिर क्षेत्रीय अधिवेशन और सम्मेलन वाराणसी के अलावा दरभंगा, सिंगरौली, इंदौर, मुलताई, नागपुर, सेवाग्राम, मुंबई, हैदराबाद,विजयवाडा, बंगलुरु आदि कई स्थानों पर हुए. लोकविद्या जन आन्दोलन के कई प्रकाशन हैं जो विद्या आश्रम की वेबसाईट vidyaashram.org पर उपलब्ध हैं.

हैदराबाद (2003) में हुए एशिया सामाजिक मंच से ही लोकविद्या, यानि 'समाज में ज्ञान' पर विमर्श का आयोजन किया जाता रहा है. विश्व सामाजिक मंच मुंबई (जनवरी 2004), कराची (मार्च 2006), नैरोबी (जनवरी 2007) और तुनिस (मार्च 2015) तथा भारत सामाजिक मंच दिल्ली (नवम्बर 2006) के सम्मेलनों में लोकविद्या जन आन्दोलन शामिल होता रहा है और इन सभी सम्मेलनों में प्रत्येक पर एक (कुल5) पुस्तिका प्रकाशित की गई है, ये सब विद्या आश्रम वेबसाईट पर उपलब्ध हैं.

लोकविद्या जन आन्दोलन के प्रमुख बिंदु

1. लोकविद्या को विश्वविद्यालय के ज्ञान के बराबर का दर्जा हो.
2. लोकविद्या आधारित कार्य करने वालों को सरकारी कर्मचारी के बराबर आय हो.
3. हर समस्या, विवाद और विसंगति का हल संवाद से हो. युद्ध और हिंसा का मार्ग स्थाई तौर पर नकारा जाये.

इन मुद्दों पर आधारित विचार और कार्यक्रम सामाजिक विषमता के खिलाफ संघर्ष और आर्थिक-सामाजिक न्याय के संघर्ष के अगले कदम हैं. इन मुद्दों पर संघर्ष न केवल गरीबी, बेरोज़गारी और अशिक्षा के महाजाल से मुक्ति का रास्ता बनाते हैं बल्कि वैश्विक आर्थिक और पर्यावरणीय संकटों का हल भी प्रस्तुत करते हैं.

किसान, कारीगर, आदिवासी, ठेला-पटरीवाले और छोटे-छोटे दुकानदार, लोक-कलाकार, महिलायें और सभी तरह के सेवा और मरम्मत का काम करने वाले, अपने ज्ञान के बल पर अपना परिवार चलाते हैं. इन सभी के परिवारों में उतनी ही आय होनी चाहिए, जितनी एक सरकारी कर्मचारी की अथवा संगठित क्षेत्र के कर्मचारी की होती है. ये ज़िम्मेदारी सरकारें लें.

तय है कि इस मुकाम तक लोगों के अपने ज्ञान के आधार पर ही पहुंचा जा सकता है. समाज में दबदबा रखने वाले लोगों की व्यवस्था का विकल्प सामान्य जन के ज्ञान के आधार पर ही बनाया जा सकता है.

लोकविद्या जन आन्दोलन, भारत

प्रमुख कार्यालय: विद्या आश्रम, सारनाथ, वाराणसी

वेब साईट: https://vidyaashram.org

ई-मेल: vidyaashram@gmail.com

संपर्क

हरिश्चंद्र केवट (+91 9555744251)
haribhu222@gmail.com

फ़ज़लुर्रहमान अंसारी (+91 7905245553)
fazlurrahmana@gmail.com

लोकविद्या क्या है?

लोकविद्या की अभिव्यक्ति प्रमुखतः निम्नलिखित बिन्दुओं की सहायता से होती है.

1. समाज में लोगों के पास जो ज्ञान होता है उसे लोकविद्या कहते हैं.
2. लोकविद्या कालेज और विश्वविद्यालय से बाहर समाज में ही बसती है.
3. जो लोग विश्वविद्यालय नहीं जाते वे अज्ञानी नहीं होते. वे समाज से ज्ञान और विद्या हासिल कर अपनी ज़िन्दगी चलाते हैं. उन्हें लोकविद्या के स्वामी या लोकविद्याधर कहते हैं.
4. लोकविद्या परंपरागत विद्या अथवा स्थानीय विद्या नहीं है और न यह जाति, गाँव, धर्म, नस्ल में सिमित की जा सकती है.
5. लोकविद्या समाज में बसती है. इसे किसी किताब, जाति, धर्म, ग्रंथालय, विश्वविद्यालय अथवा कंप्यूटर में बाँधा नहीं जा सकता. यह लोगों के पास जिंदा रहती है और उनके द्वारा विकसित होती रहती है.
6. लोकविद्या नित-नवीन होती है. अपनी और समाज की ज़रूरतों के चलते लोग अपने अनुभव के आधार पर अपनी तर्क बुद्धि और प्रयोगों के जरिये लोकविद्या में सतत् इजाफा करते रहते हैं.
7. समाज की शक्ति का आधार लोकविद्या में है. लोकविद्या के बल पर लोग केवल अपनी जीविका ही नहीं चलाते बल्कि प्रकृति और समाज से अपने रिश्ते बनाते हैं, सही-गलत की पहचान करते हैं, संगठन बनाते हैं, अन्याय का मुकाबला करते हैं और मूल्यों और तर्कों की बुनावट से अपनी विश्वदृष्टि बनाते हैं.
8. लोगों के सोचने का तरीका, समाज के मूल्य, तर्क की विधाएं, संगठन के विचार, आपस में और प्रकृति के साथ उनके रिश्ते तथा उनकी जानकारियाँ, हुनर, कला व दर्शन सभी कुछ मिलकर ज्ञान की जो दुनिया बनाते हैं, उसे लोकविद्या कहते हैं.
9. किसान, हर तरह के कारीगर, आदिवासी, मरम्मत और सेवा कार्य करने वाले, छोटे दुकानदार, लोक कलाकार, और महिलाएं ये सब विविध स्रोतों से अपने बूते ज्ञान हासिल करते हैं और इस ज्ञान के बल पर समाज में अपनी भागीदारी करते हैं. सभी लोकविद्याधर मिलकर लोकविद्या-समाज बनाते हैं.
10. लोकविद्या श्रम और बुद्धि को अलग-अलग नहीं करती. लोकविद्या में कोई कार्य केवल श्रम का नहीं माना जाता, बल्कि श्रम और ज्ञान के मेल में ही देखा जाता है. दूसरे शब्दों में लोकविद्या मेहनत का काम करने वाले किसी व्यक्ति को मात्र मज़दूर नहीं मानती, बल्कि ज्ञानी व्यक्ति मानती है. लोकविद्या दर्शन में प्रत्येक मनुष्य ज्ञानी है और उसके ज्ञान की प्रतिष्ठा ही बेहतर दुनिया बनाने का रास्ता बनाती है.
11. समाज में फैली सामाजिक और आर्थिक गैर-बराबरी को तभी दूर किया जा सकता है जब लोकविद्या को विश्वविद्यालय की विद्या के बराबर मान और मूल्य मिले.

लोकविद्या जन आन्दोलन एक ज्ञान आन्दोलन है.
यह बृहत् समाज में
लोकविद्या और लोकविद्या-समाज के लिए
बराबरी का दर्जा हासिल करने का लक्ष्य रखता है.